भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए 30 मे से 05 जून, 2016 साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	मे -जून, 2016 माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)							साप्ताहिक सलाह
दिनांक	30	31	1	2	3	4	5	
पंजाब								
भटिंडा	0	0	0	5	0	0	0	फसल पौद अवस्था से लेकर प्रारंभिक, वानस्पतिक अवस्था में है। (विशेष रूप से देसी कपास) अप्रैल में बुआई की गई देसी अथवा अमेरिकन क़िस्मों/संकरों में सिंचाई का कार्य बुआई पश्चात देखभाल का कार्य चल रहा है। कुछ स्थानों में, किसानों ने रिक्त स्थानों को भरने तथा अतिरिक्त पौधों को उखाड़ने (विरलीकरण) का कार्य भी किया है। कपास की फसल में इस समय खरपतवार का प्रकोप नहीं है। यद्यपि खेत की मेढ़ों तथा आस-पास के क्षेत्रों में खरपतवार दिखाई दे रहे है। सफेद मक्खी (1-16 प्रति 3 पत्तियाँ) तथा फूल कीट (0-4 प्रति 3 पत्तियाँ) का प्रकोप रिकार्ड किया गया है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि, नाशीकीट संख्या वृध्दी के लिए फसल की नियमित निगरानी कराते रहें। सफेद मक्खी तथा फूलकीट की संख्या वृध्दी बदलती जलवायु के कारण है इसके लिए किसी कीटनाशक का छिड़काव न करें। ***खरपतवार प्रबंधन***: खेत के अंदर, मेढ़ों तथा आस-पास के क्षेत्रों में खेत की तैयारी के समय ही खरपतवारों को निकाल दें। और बुआई के बाद भी खेत को खरपतवारों से मुक्त रखें। जिन खेतों में फसल की बुआई अप्रैल के महीने में हुई है (देसी कपास) वहाँ फसल 5 से 6 सप्ताह की होने से पहली सिंचाई के पश्चात अतिरिक्त पौधों को उखाड़ने की सलाह दी जाती है। जिन खेतों में जड़ गलन की समस्या रहती है, वहाँ इसके लक्षण दिखाई देने पर किसानों को कपास के पौधों की जड़ को बविस्तिन @1.0 ग्रा./लीटर पानी के घोल से तर करने की सलाह दी जाती है। फसल एक महीने की होने पर पहली सिंचाई करें। क्योंकि अधिक तापमान के कारण पौधे झुलस रहे है। सिंचाई के बाद यूरिया की आधी मात्रा अर्थात बीटी संकरों के लिए 65 किग्रा. तथा गैर बीटी क़िस्मों के लिए 30 से 35 किग्रा. का अनुप्रयोग करें।
मुकतसर	0	0	0	3	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	0	5	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा								
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	हिसार में फसल पौध अवस्था में है। हिसार तथा फतेहाबाद के आस-पास के क्षेत्रों में किए गए सर्वेक्षण में इन जिलों के कुछ स्थानों पर सफेद मक्खी की संख्या 0 से 9 प्रति 3 पत्तियां दर्ज कि गई। किसान के खेतों में देसी कपास के कुछ स्थानों में जड़-गलन दर्ज की गई है। हिसार तथा फतेहाबाद जिलों में सफेद मक्खी की औसत संख्या 1 से 2 प्रौढ़ प्रति पौधा किसानों के खेतों में दर्ज कि गई। कुलाना गांव (हांसी ब्लाक) में कपास में खीरा वर्गीय की अंत:फसल में सफेद मक्खी कि संख्या 4 से 5 प्रौढ़ प्रति पौधा दर्ज की गई है। कपास के पौधों पर सफेद मक्खी की अधिक संख्या खीरा-वर्गीय अंत:फसल के कारण है जिसमें जौसिड शिशु तथा प्रौढ़ो की अधिक संख्या (30 से 40 प्रति पत्ती) मिलती है। फुलकीट का प्रकोप जांदली-खुर्द में दर्ज किया गया। मिलीबग *फीनाकोकस सोलेनोप्सिस* का प्रकोप सिर्फ कंधी-बूटी, पीली-बूटी तथा पार्थेनियम जैसे खरपतवारों पर पाया गया। किसानों को सलाह दी जाती है कि, खेत के अन्दर तथा बाहर के खरपतवारों को निकाल दें। उर्वरकों की संतुलित मात्रा के ही अनुप्रयोग की सलाह दी जाती है। चूँकि खीरा-वर्गीय फसलों पर सफेद मक्खी की अधिक संख्या दर्ज की गई है, अंत: इस नाशीकीट की
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	

								निगरानी तथा आवश्यकतानुसार प्रबंधन इस फसलों पर भी करते रहें। किसानों को सलाह दी जाती है कि साप्ताहिक अंतराल पर कीट-संख्या की निगरानी करते रहें तथा यथासंभव रासायनिक निटनाशकों के छिड़काव को टालें। आवश्यक होने पर 200ली. पानी में निंबीसिडीन 300 पीपीएम का @1.0 ली./एकड़ की दर से फसल पर छिड़काव करें। गर्मी की लहर निरंतर चलते रहने पर सफेद मक्खी की संख्या कम हो जाएगी। यद्यपि, भारी वर्षा होने पर हवा में नमी बढ़ने तथा तापमान में गिरावट आने के फलस्वरूप सफेद मक्खी की संख्या में वृद्धि हो सकती है। चूँकि, मिलीबग ग्रसित खरपतवारों पर *एनासियस* परजीव्याम काफी सक्रिय होने से मिलीबग की संख्या नियंत्रित रहेगी। अंत: इस नाशीकीट के नियंत्रण के लिए किसी कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता नहीं है।

राजस्थान								
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	नहर का पानी छोड़े जाने में देरी होने के कारण कपास के बुआई के कार्य में विलंब हुआ है।
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	0	

उड़ीसा								
कोरापुट	0	**0**	**0**	**4**	**6**	**0**	5	कपास बुआई का कार्य जून में प्रारंभ होगा। किसानों को सलाह दी जाती है कि ग्रीष्मकालीन जुताई करें तथा मानसून-पूर्व वर्षा का लाभ उठाकर खेतों की सफाई करें। कपास की किस्मों/संकरों के बीजों की आवश्यक मात्रा समय रहते खरीद कर रख लें।
कालाहांडी	0	**0**	**0**	**0**	**4**	**0**	10	
बोलांगीर	0	**0**	**0**	**0**	**4**	**0**	0	

महाराष्ट्र								
नागपुर	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	0	खानदेश के कुछ हिस्सों तथा नांदेड जिले में कपास की बुआई प्रारंभ हो चुकी है। खेत की तैयारी के लिए जुताई आदि कार्य पूरा करें। सिंचित कपास के लिए नाली-मेढ़ बनाएँ। ड्रिप सिंचाई के लिए लेटरल नालियों को लगाकर रखें। रस चूषक कीटों के लिए थायोमेथोक्जाम 4.0 ग्रा. प्रति किलो बीज की दर से तथा फुफूंद जनित रोगों के लिए कार्बेंडेजिम 4-5 ग्रा. प्रति किलो बीज की दर से तथा नत्र एवं फास्फोरस स्थरीकरण के लिए *एजोटोबेक्टर* तथा पी.एस.बी. 25 ग्रा. प्रति किलो बीज की दर से बीज प्रक्रिया करनें की सलाह दी जाती है। बुआई का उचित समय 10 से 20 जून के मध्य है। जुलाई के पहले पखवाड़े में राज्य में शुष्क काल रह सकता है। चौड़ी बेड-नाली अथवा मेढ़ों पर बुआई, पलवार का अनुप्रयोग जैसी जल संग्रह तथा नमी संरक्षण विधियों का प्रबंध करना महत्वपूर्ण रहेगा।
वर्धा	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**6**	0	
चंद्रपुर	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**3**	0	
यवतमाल	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**4**	0	
अमरावती	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**8**	0	
अकोला	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	0	
बुलढाना	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	9	
परभणी	**0**	**0**	**0**	**0**	**4**	**4**	11	
नांदेड़	**0**	**0**	**0**	**0**	**3**	**4**	3	
बीड़	0	0	0	0	5	4	14	
वासिम	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	6	
धुले	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	6	
जलगांव	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	6	
जालना	**0**	**0**	**0**	**0**	**3**	**0**	11	
औरंगाबाद	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	8	

कर्नाटक

धारवाड़	0	**0**	**6**	**0**	**0**	**6**	29	खेत की तैयारी तथा खेत में गोबर की खाद डालने का कार्य चल रहा है। जून के प्रथम सप्ताह में वर्षा के आगमन के बाद बुआई कार्य शुरू होगा। खेतों की जुताई, पूर्व फसल के अवशेषों व अन्य कचरे को खेत से निकालने, गोबर की खाद या कंपोस्ट को मिट्टी में मिलाने का कार्य हो चुका है। मई के दूसरे सप्ताह में मानसून-पूर्व वर्षा होने से खेतों के तैयारी में मदत मिली। कपास बुआई के लिए अधिकांश खेतों की तैयारी हो चुकी है। आवश्यक दूरी पर खेत में नालियाँ बनाने से वर्षा जल संरक्षण मे मदत मिलेगी और जून के पहले सप्ताह में वर्षा होने के तुरंत बाद हाथ से बीज बोने में भी मदत मिलेगी। अपने क्षेत्र के लिए उपयुक्त कपास के संकर बीजों को ही खरीदें। सिंचित परिस्थिति में बीटी संकरों की बुआई मई के अंतिम सप्ताह में बुआई पूर्व सिंचाई के साथ करने की सिफारिश की गई है। बुआई से पहले 5 से 6 टन प्रति हेक्टर की दर से गोबर की खाद या कंपोस्ट खेत की मिट्टी में मिलाएँ। बारानी परिस्थिति में जून के पहके सप्ताह में वर्षा होने के तुरंत बाद कपास की बुआई करने की सलाह दी जाती है। आंतरजातीय बीटी संकरों के लिए 90 x 60 सेमी. तथा अन:जातीय बीटी संकरों के लिए 120 x 60 सेमी. के अंतर पर बुआई करें। प्रत्येक स्थल पर एक ही बीज की बुआई करें। अंतिम 3 से 4 कतारों में रिफ्यूजिया कपास के बीजों की बुआई करें। *एजोस्पीरिलम* तथा पी.एस.बी. जैसे जैवसंवर्धकों (जैवउर्वरकों) से बीजोपचार करके बुआई करें।
हवेरी	0	**0**	**6**	**6**	**3**	**18**	22	
मैसूर	0	**0**	**4**	**28**	**17**	**20**	27	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

हिन्दी संसकरण:

उल्हास नंदनकर, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं

प्रभारी, हिन्दी अधिकारी, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)